International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 49-50

शिक्षा और आधुनिक समाज

Vidushi sharma

Singhania University Pachari Badi Jhunjhunu, Rajasthan, India

सारांश

इस शोध पत्र के द्वारा शिक्षा और समाज के बारे में बात की गई है। शिक्षा के उदयकाल के बारे में निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। परंतु जबसे यह अस्तित्व में आई है, इसने समाज का स्वरूप ही बादल दिया है। और जैसे – जैसे इसका प्रचार – प्रसार होता गया वैसे – वैसे सभी प्रकार के समाजों में इसकी महत्ता पता लगती गई। वास्तव में एक शिक्षा ही है जो एक व्यक्ति को "मानव" "महामानव" बनाती है। इस बारे में स्वामी विवेकानंद जी के विचार अनुकरणीय हैं –"जितना हम सीखते है, उतनी ही हमें अपनी अज्ञानता का एहसास होता जाता है"। आधुनिक समाज में तो शिक्षा का महत्त्व इतना अधिक है कि बिना शिक्षा के आधुनिक समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज जो मानव ने इतनी उन्नति की है, वह शिक्षा और शिक्षण की ही देंन है। इसलिए इस आधुनिक समाज में शिक्षा और उसे प्रदान करने वाला शिक्षक तथा वह विधि जिससे शिक्षा को प्रचारित – प्रसारित किया जाता है, वह क्रिया शिक्षण, तीनों ही इस समाज के अभिन्न अंग हैं, या यूं कहें किये तीनों समाज के आधार स्तम्भ हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इनके बिना एक सभ्य समाज की कल्पना ही एक मूर्खतापूर्ण कार्य होगा।

मूल शब्दः उदयकाल, प्रचार, प्रसार, अज्ञानता, प्रचारित, प्रसारित, आधुनिक, कल्पना।

प्रस्तावना

मानव स्वयं से ही सामाजिक प्राणी रहा है। वह समाज के साथ रहते हुए 'स्वयं' के साथ भी रहता है। और इस स्वयं से परिचय केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

शिक्षा और शिक्षण दोनों ही असाधारण कार्य करते हैं। शिक्षा के द्वारा ही एक मानव की स्वयं से, समाज से, राष्ट्र आदि से पहचान होती है। शिक्षा का महत्व मानव जीवन मे अद्भुत स्थान रखता है। शिक्षा चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक दोनों ही महत्वपूर्ण है। अब बात करते हैं आधुनिक समाज की। तो आज का समाज और युवा वर्ग किस दिशा की ओर अग्रसर है ये हम सब जानते है। इसमे कोई दो राय नहीं है कि आज के समाज में जोश है, जज्बा है, काबिलियत है परंतु फिर भी इन सबके साथ कुछ कमी है तो एक ठहराव (Stability) की। सफलता को किसी भी कीमत पर पाना भी ठीक नहीं होता। सफलता केवल परिश्रम और भाग्य द्वारा मिश्रित रूप से मिले तो वह ज्यादा फलदायक होती है, स्वयं व्यक्ति के लिए भी और समाज के लिए भी।

सब कुछ हासिल कर लेने के बाद भी मन में एक टीस ना रहे, इसलिए हम आज से ही अपने आने वाले कल को संतुष्टि परक बनाने के लिए शिक्षित समाज का हिस्सा होने के नाते, जहाँ भी हो जैसे भी, हो शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों एवं नैतिकता का प्रचार-प्रसार करें ताकि आत्मसंतुष्टि के उस स्तर को पार कर सकें जिसका उल्लेख एक शिक्षाविद अब्राहम-एच-

मैस्लों ने किया था *The level of self actualization.* उन्होने अपने इस सिद्धान्त में कहा है कि आत्मसंतुष्टि के इस स्तर Level को बहुत कम लोग छू पाते हैं। क्योंकि इस स्तर पर आकर इंसान यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि पूरे जीवन मै केवल सब कुछ पा लेने की ही होड़ में लगा रहा। जिस चीज़ का सपना देखा, उसे हासिल कर के ही दम लिया। परंतु अब क्या? जीवन भर मैंने कितना कुछ लिया। इस प्रकृति ने, इस समाज ने, मुझे क्या कुछ नहीं दिया। और बदले में मैंने इन सबको क्या दिया? वैसे भी मनोविज्ञान Psychology के अनुसार इंसान जब कुछ भी हासिल कर लेता है, जिस चीज़ को वो पा लेता है, उसमें उस इंसान की रुचि समय के साथ - साथ घटती चली जाती है। इसलिए अब उसे कुछ नया चाहिए। कामयाबी के इस स्तर को केवल वही लोग छू पाते हैं, जिनके जीवन में कुछ अलग करने का जज़्बा होता है, जोश और जनून होता है। यहाँ केवल कुछ महत्त्व कांक्षी लोग ही पहुँच पाते हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण हो सकते हैं अमेरिका के नव - निर्वाचित राष्ट्रपति श्री डोनाल्ड ट्रम्प Donald Trump जिन्होने जो चाहा, जिस चीज़ के ख़्वाब देखे, उसे हासिल कर के दिखाया। इस बारे में उनके विचार बड़े ही जोशीले कहे जा सकते हैं – "हार में ही मिलता है जीत का मंत्र, बढ़ने के लिए छोड़ना सीखो, पैसा मोटिवेशन (Motivation) नहीं है | आप हर लड़ाई नहीं जीत सकते, जुनून और ज़िद जरूरी है, मैरिट सच्चाई, ईमानदारी सबसे उपर है"।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जीवन में हर प्रकार की शिक्षा का अपना अलग महत्त्व है, चाहे वो स्कूली शिक्षा हो, सामाजिक शिक्षा हो, आनुभविक शिक्षा हो (जो इंसान दूसरों या ज़्यादातर अपने स्वयं के अनुभव से अधिक सीखता है (Learning By Doing), व्यवहारिक शिक्षा (Practical Knowledge) आदि हो।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन भर चलती है। Learning is an endless process वास्तव में शिक्षित व्यक्ति ही समाज में परिवर्तन ला सकता है। हमारे इतिहास में इसके कितने ही उदाहरण मौजूद हें जैसे स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा मोहन रॉय, रवीन्द्र नाथ टैगौर, आदि। इस प्रकार हम यदि समाज में परिवर्तन लानें की ईच्छा रखते हैं तो सबसे पहले 'स्वयं' में परिवर्तन लाना अपरिहार्य है। क्योंकि कोई भी कार्य स्वयं से शुरू होता है। और जब हम स्वयं को अनुशासित कर लेते हैं तो इस समाज को अनुशासित होने में देर नहीं लगेगी क्योंकि well begin is half done.

निष्कर्ष

आज के समाज में उन्नति के अवसरों की कमी नही है परंतु उसे एक आधार प्रदान करना भी आवश्यक है। हम समाज के ऊपर जाने के विरोधी नहीं है अपितु हम चाहते हैं कि वो पेड़ की तरह ऊपर उठे ताकि उसकी जड़े जमीन में ही रहे, ज़मीन से उसका नाता बना रहे, उसका संचरण बना रहे। यह नितांत आवश्यक है क्योंकि-

आज दिवस में तिमिर बहुत है
जैसे हो सावन की भोर,
मानव तो आकाश की ओर
मानवता पाताल की ओर।

इस परिस्थिति से बचने के लिए शिक्षित समाज को अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी का निर्वहन करते हुए अपना कार्य अपने ही स्तर पर {Grass root level} ईमानदारी से करना चाहिए क्योंकि-

राष्ट्र निर्माता है वह जो सबसे बड़ा इंसान है,
किसमे कितना ज्ञान है, बस इसको ही पहचान है।

हमारा ध्येय-

शिक्षित समाज, शिक्षित देश।

संदर्भ सूचीं

1. प्रो. विश्वनाथ प्रसाद।
2. राकेश गुप्ता।
3. अरविंद कुमार।
4. अंजनी राय।
5. अज़ीज़ खान।
6. फाड़िया, बी एल, के एल "उच्चतर लोक प्रशासन" (2002, साहित्य भवन)
7. शर्मा एंड अग्रवाल "प्रशासनिक विचारक" (2001 - रमेश प्रकाशन)
8. भांभरी०सी०पी० "लोक प्रशासन "सिद्धांत एवं व्यवहार" (1995 – जयप्रकाश प्रकाशन)
9. शर्मा महादेव "लोक प्रशासन-सिद्धान्त एवं व्यवहार" (1990 – जयप्रकाश प्रकाशन)
10. शर्मा०पी०डी०एच, सी० "लोक प्रशासन – सिद्धांत एवं व्यवहार" (1995-जयप्रकाश प्रकाशन)
11. अवस्थी एवं अवस्थी "प्रशासनिक सिद्धान्त" (1989 – पूजा प्रकाशन)
12. नाथराय पारस "अनुसंधान परिचय" (2004 - लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन)
13. सिंह साहिब, सिंह सविन्दर "लोक पदाधिकारी तथा वित्तीय प्रशासन" (2001 – न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कंपनी)
14. मेहता डी0 डी0 "माध्यमिक शिक्षा एवं स्कूल प्रबन्ध" (2007 – लक्ष्मी बुक डिपो)
15. मेहता डी0 डी0 "शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान" (2007 - लक्ष्मी बुक डिपो)
16. अग्रवाल मनोज श्रीवास्तव कुलदीप "यू. जी. सी. नेट" (2012 - अरिहंत पब्लिकेशन्स)
17. Bhattavharya.S "Management effectiveness" (Oxford & IBH Publishing House, Delhi)
18. Frederickson George "Ethics and Public Administration" (M.E Sharpe, New York)
19. शर्मा के अरविंद, शर्मा इन्दु "जनसेवा प्रेरित नोकरशाही–भारत में नागरिक आधिकार-पत्र" (भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली)
20. अर्थशास्त्र कौटिल्य मैसूर प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग हाउस, मैसूर
21. Justice Reddy P.Jagamohan "Law & Society" (Ajanta Publications, Delhi)